

सेमेस्टर –IV
हिंदी लोकनाट्य
Elective Course –DSE4

Course title & Code	Credits	Credit distribution of the course			Eligibility criteria	Pre-requisite of the course
		Lecture	Tutorial	Practical		
हिंदी लोकनाट्य(DSE 4)	4	3	1	0	हिंदी के साथ 12वीं उत्तीर्ण	NIL

पाठ्यक्रम के उद्देश्य (Course Objective):

1. विद्यार्थियों को भारतीय लोकनाट्य साहित्य और लोक-परंपरा का अवलोकन कराना।
2. लोक-जीवन और लोक-संस्कृति की जानकारी देना।
3. हिंदी लोकनाट्य शैलियों के प्रति रुचि विकसित करना।

पाठ्यक्रम अध्ययन के परिणाम (Course Learning Outcomes):

1. लोकनाट्य की समग्र भारतीय परंपरा का परिचय प्राप्त होगा।
2. विविध प्रादेशिक लोक-नाट्य रूपों के स्वरूप की जानकारी प्राप्त होगी।
3. आधुनिक हिंदी रंगमंच के संदर्भ में विविध लोकनाट्य रूपों के प्रयोगधर्मी स्वरूप की समझ विकसित होगी।

इकाई – 1

(12घंटे)

- लोकनाट्य : अवधारणा, स्वरूप और विकास
- परंपरागत एवं आधुनिक लोकनाट्य का इतिहास (भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र के पूर्व से लेकर मध्यकालीन तथा आधुनिक मिश्रित प्रयोगधर्मी स्वरूप तक)

इकाई – 2(12घंटे)

- प्रमुख लोकनाट्य रूपों का संक्षिप्त परिचय: रासलीला, रामलीला, सांग, नौटंकी, ख्याल, माच, पंडवानी, बिदेसिया।

इकाई– 3: पाठपरक अध्ययन (12 घंटे)

- नलदमयंती – सांग (लखमीचंद)

इकाई– 4 : पाठपरक अध्ययन (9 घंटे)

- राजयोगी भरथरी – सिद्धेश्वर सेन

सहायक ग्रंथ:

1. हिंदी साहित्य का वृहत इतिहास – सोलहवां भाग, राहुल सांकृत्यायन, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
2. भारतीय लोकनाट्य-वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
3. भारतीय लोक साहित्य : परंपरा और परिदृश्य-विद्या सिन्हा, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली ।
4. लखमीचंद ग्रंथावली, हरियाणा साहित्य अकादमी ।
5. लोक साहित्य : पाठ और परख-विद्या सिन्हा, आरुषि प्रकाशन, नोएडा ।
6. भिखारी ठाकुर रचनावली- (संपादक) प्रो. वीरेंद्र नारायण यादव, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
7. परंपराशीलनाट्य-जगदीशचंद्रमाथुर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना ।
8. हमारे लोकधर्मीनाट्य-श्याम परमार, लोकरंग, उदयपुर, राजस्थान ।
9. पारंपरिक भारतीय रंगमंच : अनंत धाराएँ-कपिला वात्स्यायन ।